मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

# मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 66400/97

कंगना की 'आज़ादी' पर क्यों बरपा है हंगामा 3
कृषि कानून रद्द: अभी सवाल शेष हैं! 4
हिंदुत्व के नाम पर हिंसा आतंकवाद नहीं तो और क्या है? 5
रानी कमलापति या आदिवासियों का धृतराष्ट्र आलिंगन! 6
शहर गड्ढे में क्यों न जाए जब टाउन प्लानर ही अनपढ़ हो 8

वर्ष 36 | अंक 02 | फरीदाबाद | 21-27 नवम्बर 2021 | फोन-8851091460 | ₹ 3.00

# पुलिस द्वारा लगाये गए नाके की भेंट चढ़ गया युवक पवन

**पलवल ( म.मो. )** 14 नवम्बर के अखबारों में खबर छपी थी कि सड़क दुर्घटना में मोटरसाइकिल सवार 21 वर्षीय पवन मारा गया व उसका 20 वर्षीय साथी विकास अति गंभीर रूप से घायल हो गया। सम्बन्धित गांव फ़िरोजपुर वालों ने इस पर विरोध प्रदर्शित करते हुए करीब पांच घंटे तक हाईवे को जाम कर दिया था और निकट ही स्थित ट्रैफ़िक थाने पर धावा बोल दिया था। जिसके चलते तमाम पुलिस वाले थाना छोड़ कर भाग खड़े हुए। मौके पर पहुंचे पुलिस बल व एसडीएम द्वारा मृतक परिवार को पांच लाख रुपये बतौर मुआवजा व एक नौकरी देने का झांसा देकर जाम खुलवा दिया। लेकिन उसी दिन पुलिस ने बीसियों नामजद व सैंकड़ों अन्य ग्रामीणों के विरुद्ध सड़क जाम करने व अन्य धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर दिया।

यह था कि गांव फिरोजपुर से निकल कर हाईवे पार करने के लिये वहां फ्लाईओवर बना हुआ है ताकी हाईवे के यातायात में कोई रुकावट डाले बगैर ग्रामीणों का आवागवन होता रहे। अब यहां समझने वाली असल बात, जिसे मीडिया ने छिपा लिया, यह है कि पलवल पुलिस ने इस फ्लाईओवर की बगल में, पलवल की ओर जाने वाली सर्विस लेन पर एक नाका लगा रखा है। कहने को यहां ट्रकों आदि को इसलिये रोका जाता है कि पलवल शहर में भीड़ न बढ़ जाये। 'नो एंट्री' टाईम पूरा होने के बाद इन ट्रकों को पलवल शहर पार करने के लिये छोड़ा जाता है। अपनी आदत एवं रवायत के अनुसार पुलिस वाले उन ट्रकों को भी 'नो एंट्री' टाइम में जाने देते हैं जो 100 रुपये बतौर 'एंट्री फ़ीस' उन्हें दे जाये।

इस मामले में एक ट्रक ड्राइवर ने नाके पर रुकने की बजाय ट्रक को पूरी गति से सर्विस लेन पर पलवल की ओर दौड़ा दिया। गौरतलब है कि आधी सर्विस लेन पर ट्रक खड़े थे इसलिये भगोड़े ट्रक के लिये सर्विस लेन पर पर्याप्त जगह नहीं थी। पुलिस द्वारा पकड़े जाने के भय से वह सरपट ट्रक को भगाता ले गया। उधर पवन अपने साथी विकास के साथ गांव की ओर से सर्विस लेन पर आकर पलवल की ओर करीब 80 मीटर तक निकल चुका था कि पुलिस डर के मारे भागते हुए ट्रक ने उन्हें पीछे से टक्कर मार कर दोनों को इस कदर कुचल दिया कि पवन न केवल मौके पर मारा गया बल्कि उसका शरीर ट्रक के पिछले पहियों में फंस कर रह गया जिसके चलते ड्राइवर ट्रक छोड़कर भाग गया।

कुल मिलाकर पुलिस को दिये जाने वाले 100 रुपये बचाने के चक्कर में ट्रक वाले ने उक्त कांड कर डाला। इसे यों कहना ज्यादा बेहतर होगा कि पुलिस ने अपनी वसूली के चक्कर में एक युवक की हत्या करवा दी व दूसरे को गंभीर रूप से घायल करा दिया। मौके पर पहुंची एसडीएम वैशाली ने ग्रामीणों को तात्कालिक रूप से संतुष्ट करने के लिये नाके पर मौजूद दो होमगार्डों व एक पुलिसकर्मी के खिलाफ़ नाम मात्र का मुकदमा दर्ज करा दिया। जिसमें होना-जाना कुछ नहीं। वास्तव में यह हत्या का मुकदमा एसपी पलवल के

पवन : पुलिसिया रिश्वतखोरी का शिकार

विरुद्ध दर्ज होना चाहिये था जिसके आदेश पर लूट-पाट का नाका लगा हुआ है। दूसरी ओर ट्रक वाले के खिलाफ़ भी कोई हत्या का मुकदमा तो दर्ज हो नहीं सकता, केवल दुर्घटना का ही केस बनता है। जिसमें अधिकतम तीन साल की सज़ा हो सकती है। सज़ा चाहे ज्यादा भी हो जाये, जिस घर का चिराग बुझ गया वह तो दोबारा जलने से रहा।

**शहर में जाम क्यों रहता है?**

इस जाम के लिये शासन-प्रशासन पूरी तरह से उत्तरदायी हैं। शहर के बीचों बीच से गुजरने वाली जीटी रोड पर जब अतिक्रमण व अवैध कब्जे होने से सड़क की चौड़ाई घटती चली गई तो वहां बाइपास का निर्माण किया गया। लेकिन प्रशासन की शिथिलता एवं भ्रष्टाचार के चलते चार लेन का बाइपास व उसके दोनो ओर बनी सर्विस लेन भी यातायात के लिये कम पड़ने लगी। प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त करके यातायात की व्यवस्था को सुधारने की अपेक्षा करीब पांच साल पहले एलिवेटीड बाइपास यानी बाइपास के ऊपर बाइपास निर्माण का कार्य शुरू किया गया था। इसके पूरा होने की फ़िलहाल कोई सम्भावना नज़र नहीं आ रही क्योंकि निर्माण कार्य लम्बे समय से बंद पड़ा है। इसके चलते वहां से यातायात का निकलना और भी दुभर हो गया है।

**पवन के दादा पर क्या बीती होगी?**

कुछ वर्ष पूर्व पवन के पिता का देहांत हो चुका था और उससे कुछ समय पूर्व उसकी दादी भी परलोक सिधार चुकी थी। बूढ़े दादा महेन्द्र का ले-देकर एक मात्र सहारा अब पवन ही बचा था जो इस क्रूर एवं भ्रष्टाचार में डूबी ब्यवस्था ने निगल लिया। सोचिये ज़रा जिस 85 वर्षीय बुजुर्ग ने एक ही साल के भीतर पहले अपनी पत्नी, फ़िर अपने बेटे के शव को कंधा दिया हो, उसने किस तरह अपने पोते के शव को कंधा दिया होगा? लेकिन इस संवेदनहीन शासन व्यवस्था को इससे क्या लेना-देना? लोग तो मरने के लिये ही होते हैं सो मरते रहते हैं।

## दोषी हैं एसपी दुग्गल

**सू**त्रों से मिली जानकारी के अनुसार इस नाके पर तैनाती पाने के लिये होमगार्ड 1000 रुपये प्रति दिन अपने अफ़सर को देता था। समझा जा सकता है कि जो 1000 देकर लगेगा वो कम से कम 2000 तो लूटेगा ही। नाका इंचार्ज पुलिस अधिकारी भी इस नाके का बाकायदा ठेका उठाकर यहां तैनाती पाता है। यदि सूत्रों की माने तो ठेके की यह रकम एक लाख रुपये मासिक बताई जाती है।

ऐसा ही एक नाका पलवल के होडल वाली साइड में भी लगा हुआ है, जो होडल साइड से आने वाले तमाम वाहनों को नो एंट्री के नाम पर लूटता है। यह ठेके कोई और नहीं पलवल ज़िले के एसपी राजेश दुग्गल द्वारा छोड़े जाते हैं। संदर्भवश सुधी पाठक जान लें कि दुग्गल साहब, सिरसा लोक सभा क्षेत्र से निर्वाचित सांसद सुनीता दुग्गल के पति हैं। सुनीता दुग्गल काफ़ी हाथ-पैर जोड़कर इन्हें ज़िले की तैनाती दिलवाती हैं, लेकिन ये साहब कहीं भी दो-चार माह से अधिक टिकते नहीं क्योंकि ये तैनाती पाते ही एकदम 'स्पीड' पकड़ लेते हैं।

# अगवानपुर की दुर्दशा के प्रति उदासीन विधायक नयनपाल रावत

**पलवल ( म.मो. )** गांव फ़िरोजपुर से करीब तीन किलो मीटर पलवल की ओर है गांव अगवानपुर। नयनपाल रावत के हल्के के इस गांव की दुर्दशा को दर्शाने के लिये ग्रामीणों ने बड़ा रोचक उपाय निकाला। सितम्बर माह में ग्रामीणों ने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया कि जो भी व्यक्ति अपने घर से दोपहिया पर सवार होकर बिना कीचड़ में गिरे गांव से बाहर निकल पायेगा उसे विजयी घोषित किया जायेगा। लगभग सभी लोगों ने प्रयास किया लेकिन कोई भी सफल नहीं हुआ। गांव वालों ने इस संवाददाता को यह भी बताया कि कुछ समय पहले एक व्यक्ति इसी तरह गिर कर मर भी चुका है।

कहने का अभिप्राय यह है कि गांव की गलियां इस कदर कीचड़ से भरी हुई है कि हर रोज सभी लोग आते-जाते उस कीचड़ में जरूर गिरते हैं और जख्मी भी होते हैं। लेकिन गांव से ही चुने गये पार्षद विनोद व क्षेत्र के विधायक रावत को रत्ती भर भी शर्म नहीं आती। ये लोग केवल चुनाव के अवसर पर वोट लेने के लिये झूठे आश्वासन देकर निकल लेते हैं। जीतने के बाद इनका एक मात्र लक्ष्य लूट-कमाई करने का रह जाता है। इन दोनों गांवों को जोड़ने के लिये पूर्व विधायक रघुबीरा ने तीन किलोमीटर की पक्की सड़क बनवाई थी। इस सड़क के होते फ़िरोजपुर के लोग अगवानपुर होते हुए सीधे पलवल पहुंच जाते थे। उस समय उन्हें पलवल जाने के लिये हाईवे पर नहीं आना पड़ता था। लेकिन बीते दो साल से वह बनी बनाई सड़क भी सीवर डालने के नाम पर खोद डाली गई। सीवर तो डलना क्या था, सड़क भी चली गई। अब यहां पक्की सड़क की जगह अधखुदी सीवर लाइन पड़ी है। यदि आज इस 'सीवर लाइन' की जगह वह सड़क होती तो फ़िरोजपुर के पवन जैसों को अपनी जान से हाथ न धोने पड़ते।

# कृषि कानून वापस: धरती लगी फ़टने तो खैरात लगी बंटने

**मज़दूर मोर्चा ब्यूरो**

**जिन किसानों को, बीते एक साल से मोदी व उनके दुमछल्ले, खालिस्तानी, नक्सली, आतंकी व मवाली आदि बता रहे थे, उनके सामने 19 नवम्बर को मोदी न केवल लम्बे लेट गये बल्कि रोनी सूरत बना कर माफ़ी मांगते नज़र आये। इन्हें कांग्रेसी एजेंट बताते हुए, असली किसान के तौर पर अपने पालतू गुर्गों को पेश करते आ रहे थे। अब यकायक उन्हें असली किसानों व फ़र्जी किसानों की पहचान हो गई।**

**अपनी झेंप मिटाने के लिये मोदी भक्तों का प्रचार तंत्र उनके इस शर्मनाक आत्म सम्पर्ण को उपहार का दर्जा दे रहा है। दरअसल मोदी ने किसानों को यह उपहार दिया नहीं है बल्कि किसानों ने उनकी मुंडी पकड़ कर अपनी न्यायसंगत अनेक मांगों में से एक मांग को मनवाया है, बाकी मांगे तो अभी शेष हैं। किसान आन्दोलन ने बीते एक वर्ष में भाजपा के उस धार्मिक एवं जातिगत प्लेटफ़ार्म को ही ध्वस्त कर डाला जिसके बल पर ये**

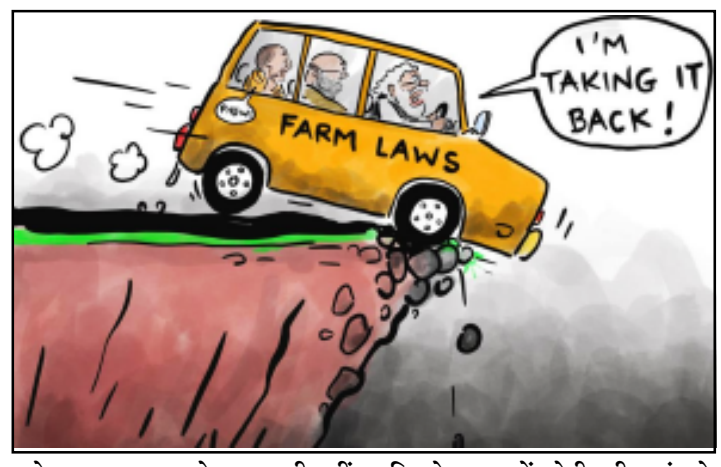


**लोग सत्तारूढ़ हुए थे। इतना ही नहीं किसान आन्दोलन देश की आम जनता को यह समझा पाने में भी काफ़ी हद तक सफ़ल रहा है कि सरकार के उक्त कृषि कानून न केवल किसानों को बर्बाद कर देंगे बल्कि उपभोक्ताओं का भी खून निचोड़ लेंगे।**

**यह आन्दोलन का ही असर रहा कि देश भर में मोदी की चहुं ओर भद्द पिटने लगी है। जहां पहले, लोग मोदी के नाम पर स्वत: खिंचे चले आते थे अब बसों में लाद कर, वह भी, दिहाड़ी पर लाने पड़ रहे हैं। मोदी ने दीवार पर लिखी इस इबारत को पढ़ने में देर न लगाई। इसी के चलते अब पेट्रोलियम व गैस के दाम भी गिरने लगे हैं।**